

कक्षा - 9

हिंदी (आलोक)

अध्याय – 9

कृष्ण-महिमा

रसखान (1933 -1618)

भाग – 3
अभ्यासमाला

कीर्ति बसुमतारी

6. सम्यक् उत्तर दो (लगभग 100 शब्दों में):

(क) कवि रसखान का साहित्यिक परिचय प्रस्तुत करो।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

6. सम्यक् उत्तर दो (लगभग 100 शब्दों में):

(क) कवि रसखान का साहित्यिक परिचय प्रस्तुत करो।

उत्तर : हिंदी साहित्य में कृष्णभक्ति आधारित काव्य रचनाओं में रसखान का नाम अग्रणी माना जाता है। उनकी रचनाएँ भक्तिरस, प्रेमरस और काव्यरस से ओत-प्रोत हैं, जो उनके नाम की सार्थकता को दर्शाती हैं। मुख्य रचनाएँ 'सुजान रसखान', 'प्रेमवाटिका', 'दानलीला' और 'अष्टयाम' प्रामाणिक मानी जाती हैं।

उनकी काव्य भाषा साहित्यिक ब्रज में मधुर और सहज है। रचनाओं में उन्होंने मुख्यतः दोहा, कवित और सवैया छंदों का प्रयोग किया है।



(ख) कवि रसखान की कृष्ण-भक्ति पर प्रकाश डालो।



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(ख) कवि रसखान की कृष्ण-भक्ति पर प्रकाश डालो।

उत्तर हिंदी साहित्य में श्रीकृष्ण को आराध्य मानकर काव्य रचना करने वालों में मुसलमान कवि रसखान का स्थान विशेष है। श्रीमद्भागवत गीता का फारसी अनुवाद पढ़ने के बाद वे कृष्णभक्ति में इतने रच गए कि अपना संपूर्ण जीवन इस भक्ति में व्यतीत किया। श्रीकृष्ण और उनसे जुड़ी वस्तुओं के प्रति उनका गहरा लगाव था, और उनके सामने सब कुछ फीका लगता था।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

उनका कहना था कि अपने आराध्य के सान्निध्य के लिए तीनों लोक के सुख त्यागना भी कम है। पाठ में दिए गए चारों छंद उनकी गहरी कृष्णभक्ति की झलक प्रस्तुत करते हैं।



(ग) पठित छंदों के जरिए कवि रसखान ने क्या-क्या कहना चाहा है?



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

न्योछावर

(ग) पठित छंदों के जरिए कवि रसखान ने क्या-क्या कहना चाहा है?

उत्तर : पठित छंदों के माध्यम से रसखान अपनी गहरी कृष्णभक्ति प्रकट कर रहे हैं। पहले छंद में वे कहते हैं कि चाहे किसी भी रूप में जन्म लें- मनुष्य, पशु, पत्थर बस श्रीकृष्ण के सान्निध्य का अवसर मिले। दूसरे छंद में वे श्रीकृष्ण से जुड़ी प्रत्येक वस्तु और स्थान के लिए तीनों लोकों के सुख भी न्योछावर करने को तैयार हैं। तीसरे छंद में कृष्ण के मिट्टी-मलिन मुख और नन्हे कदमों से आंगन

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

झंकृत करने वाली अदा करोड़ों चंद्रमाओं को भी फीकी कर देती है। चौथे छंद में रसखान अपने आराध्य के रूप को धारण कर उन्हें प्रसन्न करना चाहते हैं।



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

7. सप्रसंग व्याख्या करो (लगभग 100 शब्दों में):

(क) मनुष्य हौं तो वही .....नित नंद की धेनु मँझारन।'

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

7. सप्रसंग व्याख्या करो (लगभग 100 शब्दों में):

(क) मनुष्य हौं तो वही .....नित नंद की धेनु मँझारन।'

उत्तर :

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियां हमारी हिंदी पाठ्यपुस्तक आलोक भाग-1 के अंतर्गत रसखान जी द्वारा रचित 'कृष्ण-महिमा' नामक कविता से लिया गया है। जो अपने आराध्य का सान्निध्य हर रूप में चाहते हैं।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

व्याख्या : प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि यह व्यक्त कर रहे हैं कि श्रीकृष्ण के प्रति उनका लगाव अत्यंत गहरा है। वे चाहते हैं कि यदि उनका पुनर्जन्म मनुष्य के रूप में हो तो वे गोकुल में बसकर श्रीकृष्ण के निकट रहेंगे, जहां वे गाय चराया करते थे और यदि उनका जन्म पशु के रूप में हो, तो वे नंद की गायों के बीच रहकर चरना पसंद करेंगे। यह पंक्ति रसखान की गहन भक्ति और उनके आराध्य के प्रति असीम प्रेम को स्पष्ट रूप से दर्शाती है, जो हर रूप में श्रीकृष्ण के सान्निध्य की कामना करता है।

(ख) ‘रसखान कबौं इन आँखिन _____ करील के कुंजन ऊपर वारौं॥’



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(ख) 'रसखान कबौं इन आँखिन _____ करील के कुंजन ऊपर वारौं॥'

उत्तर :

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियां हमारी हिंदी पाठ्यपुस्तक आलोक भाग-1 के अंतर्गत रसखान जी द्वारा रचित 'कृष्ण-महिमा' नामक कविता से लिया गया है। इस पाठ में रसखानजी ने अपनी कृष्ण भक्ति उजागर की है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

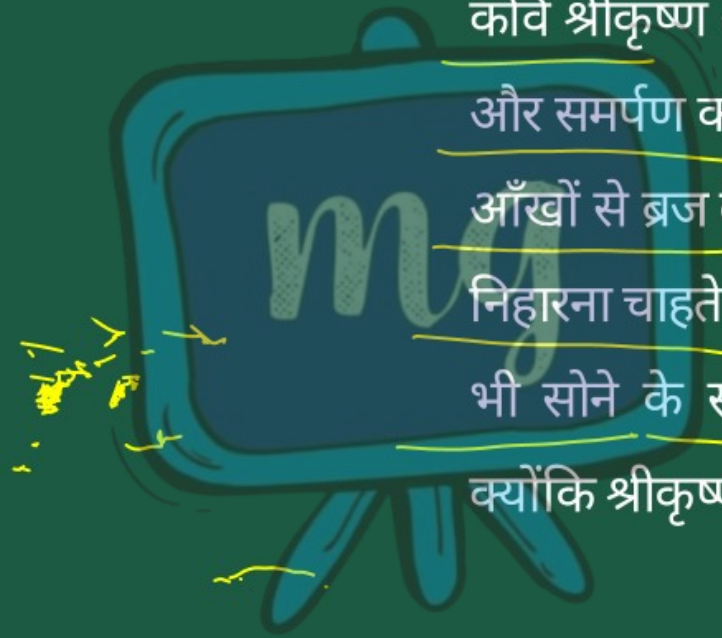

व्याख्या : यह पंक्तियाँ रसखान के सवैयों से हैं, जिनमें कवि श्रीकृष्ण और ब्रजभूमि के प्रति अपने अनन्य प्रेम और समर्पण को व्यक्त करते हैं, कहते हैं कि वे अपनी आँखों से ब्रज के वन, बागों और तालाब को जीवन भर निहारना चाहते हैं। वे ब्रज की कांटेदार झाड़ियों के लिए भी सोने के सौ महल न्योछावर करने को तैयार हैं। क्योंकि श्रीकृष्ण से जुड़ी हर चीज़ उन्हें प्रिय है।

(ग) ‘धूरि भरे अति सोभित _____ पैंजनीं बाजतीं पीरीं कछोटी।’



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(ग) 'धूरि भरे अति सोभित _____ पैंजनीं बाजतीं पीरीं कछोटी।'

उत्तर :

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियां हमारी हिंदी पाठ्यपुस्तक आलोक भाग-1 के अंतर्गत रसखान जी द्वारा रचित 'कृष्ण-महिमा' नामक कविता से लिया गया है। रसखानजी को कृष्ण के हर रूप से, हर चीज से अगाध प्रेम है।

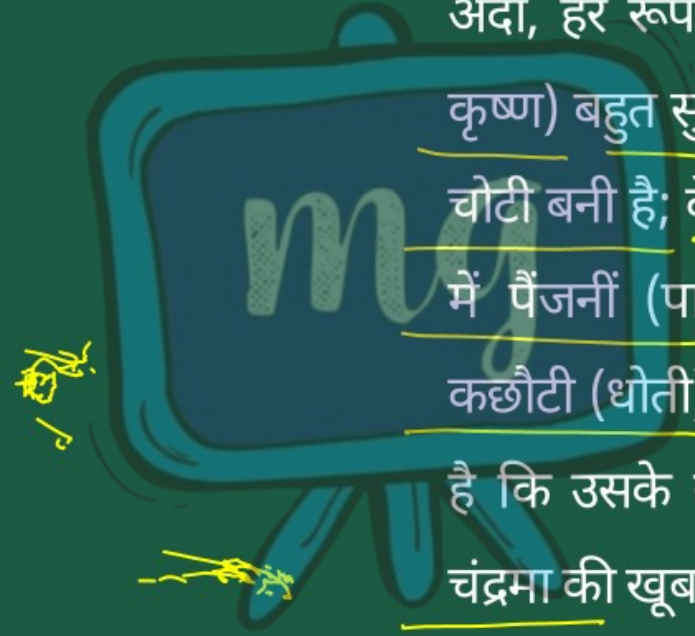

व्याख्या: श्रीकृष्ण के परम भक्त रसखान को उनकी हर अदा, हर रूप मोहित कर लेता है। धूल से सने श्री कृष्ण) बहुत सुंदर लग रहे हैं, उनके सिर पर एक सुंदर चोटी बनी है; वे आँगन में खेलते-खाते घूम रहे हैं, पैरों में पैंजनीं (पायल) बज रही है और उन्होंने पीली कछौटी (धोती) पहनी हुई है। यह दृश्य इतना मनोहारी है कि उसके सामने कामदेव की सौंदर्य और लाखों चंद्रमा की खूबसूरत चांदनी भी फीकी लगने लगती है।

(घ) ‘मोरा-पखा सिर ऊपर राखिहौं _____ गोधन ग्वारनि संग फिरौंगी।’



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(घ) 'मोरा-पखा सिर ऊपर राखिहौं _____ गोधन ग्वारनि संग फिरौंगी।'

उत्तर :

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियां हमारी हिंदी पाठ्यपुस्तक आलोक भाग-1 के अंतर्गत रसखान जी द्वारा रचित 'कृष्ण-महिमा' नामक कविता से लिया गया है। रसखान जी कृष्ण की भक्ति में उनके जैसा रूप धारण कर उन्हें रिझाना चाहते हैं।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

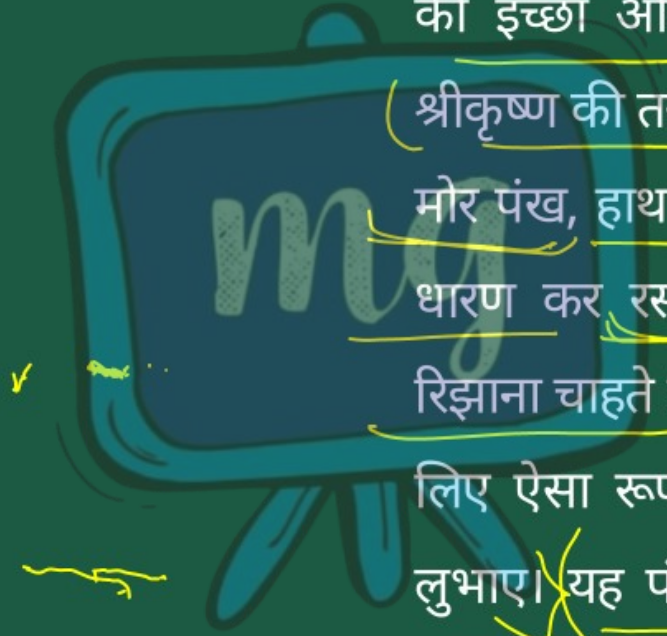

व्याख्या : इन पंक्तियों में गोपियों की कृष्ण का प्रेम पाने की इच्छा और कोशिश का वर्णन किया गया है। श्रीकृष्ण की तरह शरीर पर पीतांबर धारण कर सिर पर मोर पंख, हाथ में छोटी छड़ी, गले में गुंजो की माला धारण कर रसखान ग्वाला बन अपने आराध्य को रिझाना चाहते हैं। वो अपने आराध्य को प्रसन्न करने के लिए ऐसा रूप धारण करने को तैयार हैं, जो उन्हें लुभाए। यह पंक्ति कवि के अपने आराध्य के प्रति भक्ति के अपार सागर को दर्शाती है

भाषा-अध्ययन —

(क) निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखो:

मानुष -

पसु -

पाहन -

आँख -

छवि -

भाग -

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

तत्सम शब्द :- वे संस्कृत के शब्द हैं जो बिना किसी बदलाव (ध्वनि परिवर्तन) के सीधे हिंदी भाषा में अपना लिए गए हैं।



भाषा-अध्ययन —

(क) निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखो:

मानुष - मानव/मनुष्य

पसु - पशु

पाहन - पत्थर

आँख - नेत्र/चक्षु

छवि - छवि

भाग - भाग्य

(ख) निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखो:



कृष्ण -

कालिंदी -

खग -

गिरि -

पुरंदर -

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(ख) निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखो:

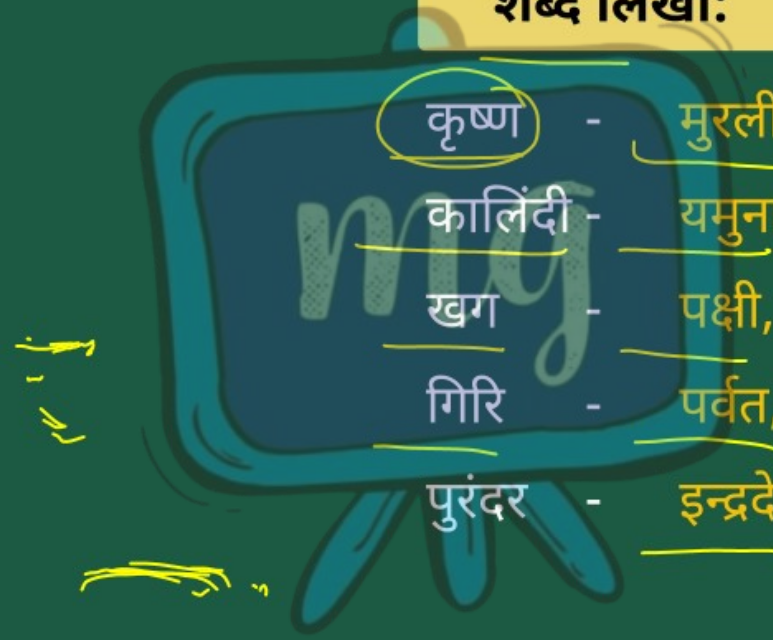

कृष्ण	-	मुरलीधर, कन्हैया, श्याम
कालिंदी	-	यमुना, कृष्णा, सूर्यपुत्री
खग	-	पक्षी, चिड़िया, विहग
गिरि	-	पर्वत, शिखर, पहाड़
पुरंदर	-	इन्द्रदेव, देवराज, विष्णु

(ग) संधि-विच्छेद करो:



पीताम्बर -

अनेकानेक -

इत्यादि -

परमेश्वर -

नीरस -

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(ग) संधि-विच्छेद करो:



पीताम्बर - पीत + अंबर

अनेकानेक - अनेक + अनेक

इत्यादि - इति + आदि

परमेश्वर - परम + ईश्वर

नीरस - निः + रस

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(घ) निम्नलिखित शब्दों के खड़ीबोली (मानक हिंदी) में प्रयुक्त होने वाले रूप बताओ:

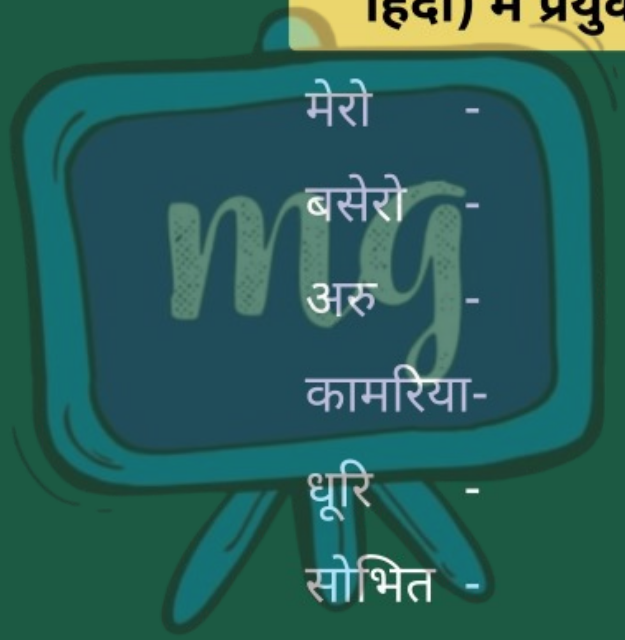

मेरो -

बसेरो -

अरु -

कामरिया-

धूरि -

सोभित -

माल -

सों -

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(घ) निम्नलिखित शब्दों के खड़ीबोली (मानक हिंदी) में प्रयुक्त होने वाले रूप बताओ:

मेरो - मेरा

बसेरो - बसेरा

अरु - और

कामरिया- कमर,कंबल

धूरि - धुल

सोभित - शोभित

माल - माला

सों - से

(ङ) निम्नलिखित शब्दों के साथ भाववाचक प्रत्यय 'ता' जुड़ा हुआ है सहजता, मधुरता, सरसता, तल्लीनता, मार्मिकता ऐसे ही 'ता' प्रत्यय वाले पाँच भाववाचक संज्ञा शब्द लिखो।



(ङ) निम्नलिखित शब्दों के साथ भाववाचक प्रत्यय 'ता' जुड़ा हुआ है सहजता, मधुरता, सरसता, तल्लीनता, मार्मिकता ऐसे ही 'ता' प्रत्यय वाले पाँच भाववाचक संज्ञा शब्द लिखो।

उत्तर : विनम्रता, कोमलता, सुंदरता, शुद्धता, गंभीरता